जैनदार्शनिक साहित्य

• डॉ० महेन्द्रकुमार जैन न्यायाचार्य

इस प्रकरणमें प्रमुख रूपसे उन प्राचीन जैनदार्शनिकों और मूल जैनदर्शनग्रन्थोंका नामोल्लेख किया गया, जिनके ग्रन्थ किसी भंडारमें उपलब्ध हैं तथा जिनके ग्रन्थ प्रकाशित हैं। उन ग्रन्थों और ग्रन्थकारों-का निर्देश भी यथासंभव करनेका प्रयत्न करेंगे, जिनके ग्रन्थ उपलब्ध तो नहीं हैं, परन्तु अन्य ग्रन्थोंमें जिनके उद्धरण पाये जाते हैं या निर्देश मिलते हैं। इसमें अनेक ग्रन्थकारोंके समयकी शताब्दी आनुमानिक हैं और उनके पौर्वापर्यमें कहीं व्यत्यय भी हो सकता है, पर यहाँ तो मात्र इस बातकी चेष्टा की गई है कि उपलब्ध और सूचित प्राचीन मूल दार्शनिक साहित्यका सामान्य निर्देश अवश्य हो जाय।

दिगम्बर आचार्य[1]

उमास्वाति–(वि० १–३ री)	तत्त्वार्थसूत्र	प्रकाशित
समन्तभद्र (वि० २-३ री)	आप्तमीमांसा	प्रकाशित
	युक्त्यनुशासन	,,
	बृहत्स्वयम्भूस्तोत्र	,,
	जीवसिद्धि	'पार्श्वनाथचरित'में वादिराजद्वारा उल्लिखित
सिद्धसेन (वि० ४-५वीं)	सन्मतितर्क	प्रकाशित
	(कुछ द्वात्रिंशतिकाएँ)	,,
देवनन्दि (वि० ६वीं)	सारसंग्रह	धवला-टीकामें उल्लिखित
श्रीदत्त (वि० ६वीं)	जल्पनिर्णय	तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकमें विद्यानन्द-द्वारा उल्लिखित।
सुमति (वि० ६वीं)	सन्मतितर्कटीका	पार्श्वनाथचरितमें वादिराजद्वारा उल्लिखित
	सुमतिसप्तक	मल्लिषेण-प्रशस्तिमें निर्दिष्ट
[इन्हींका निर्देश शान्तरक्षितके तत्त्वसंग्रहमें 'सुमतेर्दिगम्बरस्य'के रूपमें है]		
पात्रकेसरी (वि० ६वीं)	त्रिलक्षणकदर्शन	अनन्तवीर्याचार्य द्वारा सिद्धिविनि-श्चय टीकामें उल्लिखित
	पात्रकेसरी-स्तोत्र	प्रकाशित
[इन्हींका मत शान्तरक्षितने तत्त्वसंग्रहमें 'पात्रस्वामि'के नामसे दिया है।]		
वादिसिंह (६-७वीं)		वादिराजके पार्श्वनाथचरित और जिनसेनके महापुराणमें स्मृत
अकलंकदेव (वि० ७००)	लघीयस्त्रय	प्रकाशित
	(स्ववृत्तिसहित)	(अकलङ्कग्रन्थत्रयमें)
	न्यायविनिश्चय	प्रकाशित

१. श्रीवर्णीग्रन्थमाला, बनारसमें संकलित ग्रन्थ-सूचीके आधारसे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकलंकदेव (वि० ७००)	(न्यायविनिश्चय-विवरणसे उद्धृत)	(अकलङ्कग्रन्थत्रयमें) प्रकाशित
	प्रमाणसंग्रह	(अकलङ्कग्रन्थत्रयमें) प्रकाशित
	सिद्धिविनिश्चय (सिद्धिविनिश्चय-टीकासे उद्धृत),	
	अष्टशती (आप्तमीमांसाकी टीका)	प्रकाशित
	प्रमाणलक्षण (?)	मैसूरकी लाइब्रेरी तथा कोचीन-राज पुस्तकालय तिरूपुणिट्ठणमें उपलब्ध
	तत्त्वार्थवार्तिक (तत्त्वार्थसूत्रकी टीका)	प्रकाशित

[जिनदासने निशीथचूर्णिमें इन्हींके सिद्धिविनिश्चयका उल्लेख दर्शनप्रभावक शास्त्रोंमें किया है ।]

कुमारसेन (वि० ७७०)		जिनसेन द्वारा महापुराणमें स्मृत
कुमारनन्दि (वि० ८वीं)	वादन्याय	विद्यानन्द द्वारा प्रमाणपरीक्षामें उल्लिखित
वादीभसिंह (वि० ८वीं)	स्याद्वादसिद्धि	प्रकाशित
	नवपदार्थनिश्चय	मूडबिद्री भंडारमें उपलब्ध
अनन्तवीर्य (वृद्ध) (वि० ८-९वीं)	सिद्धिविनिश्चयटीका	रविभद्रपादोपजीवी अनन्तवीर्य-द्वारा सिद्धिविनिश्चयटीकामें उल्लिखित
अनन्तवीर्य रविभद्रपादोपजीवी (९वीं)	सिद्धिविनिश्चयटीका	प्रकाशित
विद्यानन्द (वि० ९वीं)	अष्टसहस्री (आप्तमीमांसा-अष्ट-शतीकी टीका)	प्रकाशित
	तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक (तत्त्वार्थसूत्रकी टीका),	,,
	युक्त्यनुशासनालङ्कार,	,,
	विद्यानन्दमहोदय	तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकमें स्वयं निर्दिष्ट तथा वादिदेवसूरि द्वारा स्याद्वाद-रत्नाकरमें उद्धृत
	आप्तपरीक्षा	प्रकाशित
	प्रमाणपरीक्षा	प्रकाशित
	पात्रपरीक्षा	,, आप्तपरीक्षाके साथ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विद्यानन्द (वि० ९वीं)	सत्यशासनपरीक्षा	प्रकाशित
	श्रीपुरपार्श्वनाथस्तोत्र	प्रकाशित
	पंचमप्रकरण	अप्रकाशित जैनमठ श्रवणबेलगोलामें उपलब्ध (मैसूरकुर्गसूची नं २८०३)
	नयविवरण (?) (त० श्लोकवा० का अंश)	प्रकाशित
अनन्तकीर्ति (१०वीं)	जीवसिद्धिटीका	वादिराजके पार्श्वनाथचरितमें उल्लिखित
	बृहत्सर्वज्ञसिद्धि	प्रकाशित
	लघुसर्वज्ञसिद्धि	,,
देवसेन (९९० वि०)	नयचक्रप्राकृत	प्रकाशित
	आलापपद्धति	,,
वसुनन्दि (१९वीं, ११वीं)	आप्तमीमांसावृत्ति	,,
माणिक्यनन्दि (वि० ११वीं)	परीक्षामुख	,,
सोमदेव (वि० ११वीं)	स्याद्वादोपनिषत्	दानपत्रमें उल्लिखित, जैन साहित्य और इतिहास पृ० ८८
वादिराज सूरि (वि० ११वीं)	न्यायविनिश्चयविवरण	प्रकाशित
	प्रमाणनिर्णय	,,
माइल्ल धवल (वि० ११वीं)	द्रव्यस्वभावप्रकाश प्राकृत	प्रकाशित
प्रभाचन्द्र (वि० ११-१२वीं)	प्रमेयकमलमार्त्तण्ड (परीक्षामुख-टीका)	,,
	न्यायकुमुदचन्द्र (लघीयस्त्रय-टीका),	,,
	परमतभंजानिल	जैन गुरु चित्तापुर आरकाट नार्थके पास
अनन्तवीर्य (वि० १२वीं)	प्रमेयरत्नमाला (परीक्षामुख-टीका)	प्रकाशित
भावसेन त्रैविद्य (वि० १२-१३वीं)	विश्वतत्त्वप्रकाश	स्याद्वाद विद्यालय बनारसमें उपलब्ध
लघुसमन्तभद्र (१३वीं)	अष्टसहस्री-टिप्पण	प्रकाशित
आशाधर (वि० १३वीं)	प्रमेयरत्नाकर	आशाधर-प्रशस्तिमें उल्लिखित
शान्तिषेण (वि० १३वीं)	प्रमेयरत्नाकर	जैन सिद्धान्त-भवन, आरा
जिनदेव धर्मभूषण (वि० १५वीं)	कारुण्यकालिका	न्यायदीपिकामें उल्लिखित
	न्यायदीपिका	प्रकाशित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजितसेन	न्यायमणिदीपिका (प्रमेयरत्नमाला-टीका)	जैन सिद्धान्त-भवन, आरामें उपलब्ध
विमलदास	सप्तभङ्गितरङ्गिणी	प्रकाशित
शुभचन्द्र	संशयवदनविदारण	,,
	षड्दर्शनप्रमाणप्रमेयसंग्रह	प्रशस्तिसंग्रह, वीर सेवा मन्दिर, दिल्ली
शुभचन्द्रदेव	परीक्षामुखवृत्ति	जैनमठ, मूडबिद्रीमें उपलब्ध
शान्तिवर्णी	प्रमेयकण्ठिका (परीक्षामुखवृत्ति)	जैन सिद्धान्त-भवन, आरामें उपलब्ध
चारुकीर्ति पंडिताचार्य	प्रमेयरत्नालङ्कार	,, ,,
नरेन्द्रसेन	प्रमाणप्रमेयकलिका	प्रकाशित
सुखप्रकाश मुनि	न्यायदीपावलि टीका	जैनमठ, मूडबिद्रीमें उपलब्ध
अमृतानन्द मुनि	न्यायदीपावलिविवेक	,, ,,
खण्डनाकन्द	तत्त्वदीपिका	जैनमठ, मूडबिद्रीमें उपलब्ध
जगन्नाथ (१७०३ वि०)	केवलिभुक्तिनिराकरण	जयपुर तेरापंथी मन्दिरमें उपलब्ध
वज्रनन्दि	प्रमाणग्रन्थ	धवलकवि द्वारा उल्लिखित
प्रवरकीर्ति	तत्त्वनिश्चय	जैनमठ, मूडबिद्रीमें उपलब्ध
अमरकीर्ति	समयपरीक्षा	हुम्मच गाणंगणि, पुटप्पामें उपलब्ध
नेमिचन्द्र	प्रवचनपरीक्षा	जैन सिद्धान्त-भवन, आरा
मणिकण्ठ	न्यायरत्न	,,
शुभप्रकाश	न्यायमकरन्दविवेचन	,,
अज्ञातकर्तृक	षड्दर्शन	पद्मनाभशास्त्री, मूडबिद्रीके पास उपलब्ध
अज्ञातकर्तृक	श्लोकवार्तिकटिप्पणी	जैनमठ, श्रवणबेलगोलामें उपलब्ध
,,	षड्दर्शनप्रपञ्च	जैन भवन, मूडबिद्रीमें उपलब्ध
,,	प्रमेयरत्नमालालघुवृत्ति	मद्रास सूची नं० १५७४
,,	अर्थव्यञ्जनपर्याय-विचार	,, ,, १५५७
,,	स्वमतस्थापन	जैनमठ, मूडबिद्री
,,	सृष्टिवाद-परीक्षा	,, ,,
,,	सप्तभङ्गी	,, ,,
,,	षण्मततर्क	,, ,,
,,	शब्दखण्डव्याख्यान	,, ,,
,,	प्रमाणसिद्धि	,, ,,
,,	प्रमाणपदार्थ	,, ,,
,,	परमतखण्डन	,, ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्ञातकर्तृक	न्यायामृत	जैनमठ, मूडबिद्री
,,	नयसंग्रह	,, ,,
,,	नयलक्षण	,, ,,
,,	न्यायप्रमाणभेदी	जैन सिद्धान्त भवन, आरा
,,	न्यायप्रदीपिका	,, ,,
,,	प्रमाणनयग्रन्थ	,, ,,
,,	प्रमाणलक्षण	,, ,,
,,	मतखंडनवाद	,, ,,
,,	विशेषवाद	बम्बई सूची नं० १६१२
	श्वेताम्बर आचार्य[1]	
उमास्वाति (वि० ३री)	तत्त्वार्थसूत्र स्वोपज्ञ भाष्य	प्रकाशित
सिद्धसेन दिवाकर (वि० ५-६वीं)	न्यायावतार	प्रकाशित
	कुछ द्वात्रिंशतिकाएँ	,,
मल्लवादि (वि० ६वीं)	नयचक्र (द्वादशार)	प्रकाशित
	सन्मतितर्कटीका	अनेकान्तजयपताकामें उल्लिखित
हरिभद्र (वि० ८वीं)	अनेकान्तजयपताका सटीक	प्रकाशित
	अनेकान्तवाद प्रवेश	,,
	षड्दर्शनसमुच्चय	,,
	शास्त्रवार्तासमुच्चय सटीक,	,,
	न्यायप्रवेश-टीका	,,
हरिभद्र	धर्मसंग्रहणी,	प्रकाशित
	लोकतत्त्वनिर्णय	,,
	अनेकान्त प्रघट्ट	जैनग्रन्थ ग्रन्थकार सूचीसे
	तत्त्वतरङ्गिणी,	,,
	त्रिभङ्गीसार	,,
	न्यायावतारवृत्ति	,,
	पञ्चलिङ्गी	,,
	द्विजवदनचपेटा	,,
	परलोकसिद्धि	,,
	वेदबाह्यतानिराकरण	,,
	सर्वज्ञसिद्धि	,,
	स्याद्वादकुचोद्यपरिहार	,,
शाकटायन (पाल्यकीर्ति) (वि० ९वीं) (यापनीय)	स्त्रीमुक्तिप्रकरण	जैन साहित्य संशोधकमें
	केवलभुक्तिप्रकरण	प्रकाशित

१. 'जैन ग्रन्थ और ग्रन्थकार' के आधारसे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धर्षि (वि० १०वीं)	न्यायावतार-टीका	प्रकाशित
अभयदेव सूरि (वि० ११वीं)	सन्मतिटीका (वादमहार्णव)	प्रकाशित
जिनेश्वरसूरि (वि० ११वीं)	प्रमालक्ष्म सटीक	प्रकाशित
	पञ्चलिङ्गीप्रकरण	,,
शान्तिसूरि	न्यायावतारवार्तिक सवृत्ति	प्रकाशित
(पूर्णतल्लगच्छीय) (वि० ११वीं)		
मुनिचन्द्रसूरि (वि० २वीं)	अनेकान्तजयपताका-वृत्तिटिप्पण	प्रकाशित
वादिदेवसूरि (१२वीं सदी)	प्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कार	प्रकाशित
	स्याद्वादरत्नाकर	,,
हेमचन्द्र	प्रमाणमीमांसा	प्रकाशित
(पूर्णतल्लगच्छ) (वि० १२वीं)	अन्ययोगव्यवच्छेदिका	,,
	वादानुशासन	(अनुपलब्ध)
	वेदांकुश	प्रकाशित
देवसूरि	जीवानुशासन	प्रकाशित
(वीरचन्द्रशिष्य) (वि० ११६२)		
श्रीचन्द्रसूरि (वि० १२वीं)	न्यायप्रवेशहरिभद्रवृत्तिपञ्जिका	प्रकाशित
देवभद्रसूरि	न्यायावतारटिप्पण	,,
(मलधारि श्रीचन्द्र शिष्य)		
(वि० १२वीं)		
मलयगिरि (वि० १३)	धर्मसंग्रहणीटीका	प्रकाशित
चन्द्रसेन	उत्पादादिसिद्धि सटीक	,,
(प्रद्युम्नसूरि शिष्य) (वि० १३वीं)		
आनन्दसूरि	सिद्धान्तार्णव	अनुपलब्ध
अमरसूरि (सिंहव्याघ्रशिशुक)		
रामचन्द्रसूरि	व्यतिरेकद्वात्रिंशिका	प्रकाशित
(हेमचन्द्र शिष्य) (१३ वीं)		
मल्लवादि (१३ वीं)	धर्मोत्तरटिप्पणक	पं० दलसुखभाईके पास
प्रद्युम्नसूरि (१३ वीं)	वादस्थल	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें सूचित
जिनपतिसूरि (१३ वीं)	प्रबोधवादस्थल	,, ,,
रत्नप्रभसूरि (१३ वीं)	स्याद्वादरत्नाकरावतारिका	प्रकाशित
देवभद्र (१३ वीं)	प्रमाणप्रकाश	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें सूचित
नरचन्द्रसूरि	न्यायकन्दलीटीका	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें सूचित
(देवप्रभ शिष्य) (१३ वीं)		
अभयतिलक (१४ वीं)	पञ्चप्रस्थन्यायतर्कव्याख्या	,, ,,
	तर्कन्यायसूत्रटीका	,, ,,
	न्यायलंकारवृत्ति	,, ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मल्लिषेण (१४ वीं)	स्याद्वादमञ्जरी	प्रकाशित
सोमतिलक (वि० १३९२)	षड्दर्शनटीका	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें सूचित
राजशेखर (१५ वीं)	स्याद्वादकलिका	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें सूचित
	रत्नाकरावतारिका	
	पञ्जिका	प्रकाशित
	षड्दर्शनसमुच्चय	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें सूचित
	न्यायकन्दलीपञ्जिका	
ज्ञानचन्द्र (१५ वीं)	रत्नाकरावतारिकाटिप्पण	प्रकाशित
जयसिंहसूरि (१५ वीं)	न्यायसारदीपिका	प्रकाशित
मेरुतुङ्ग (महेन्द्रसूरि शिष्य) (१५ वीं)	षड्दर्शननिर्णय	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें सूचित
गुणरत्न (१५ वीं)	षड्दर्शनसमुच्चयकी तर्करहस्यदीपिका	प्रकाशित
भुवनसुन्दरसूरि (१५ वीं)	परब्रह्मोत्थापन	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें
	लघु-महाविद्याविडम्बन	,,
सत्यराज सुधानन्दगणिशिष्य (१६ वीं)	जल्पमंजरी	,,
साधुविजय (१६ वीं)	वादविजयप्रकरण	,,
	हेतुदर्शनप्रकरण	,,
सिद्धान्तसार (१६ वीं)	दर्शनरत्नाकर	,,
दयारत्न (१७ वीं)	न्यायरत्नावली	,,
शुभविजय (१७ वीं)	तर्कभाषावार्तिक	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें
	स्याद्वादमाला	प्रकाशित
भावविजय (१७वीं)	षड्त्रिंशत्जल्पविचार	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें
विनयविजय (१७ वीं)	नयकर्णिका	प्रकाशित
	षट्त्रिंशत्जल्पसंक्षेप	जैनग्रन्थ ग्रन्थकारमें
यशोविजय (१८वीं)	अष्टसहस्रीविवरण	प्रकाशित
	अनेकान्तव्यवस्था	,,
	ज्ञानबिन्दु (नव्यशैलीमें)	,,
	जैनतर्कभाषा	,,
	देवधर्मपरीक्षा	,,
	द्वात्रिंशत् द्वात्रिंशतिका,	,,
	धर्मपरीक्षा	,,
	नयप्रदीप	,,
	नयोपदेश	प्रकाशित
	नयरहस्य	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यशोविजय (१८वीं)	न्यायखण्डखाद्य (नव्यशैली)	प्रकाशित
	न्यायालोक ,,	,,
	भाषारहस्य	,,
	शास्त्रवार्तासमुच्चयटीका	,,
	उत्पादव्ययध्रौव्यसिद्धिटीका	,,
	ज्ञानार्णव	,,
	अनेकान्त प्रवेश	,,
	गुरुतत्त्वविनिश्चय	,,
	आत्मख्याति	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें
	तत्त्वालोकविवरण	,,
	त्रिसूत्र्यालोक	,,
	द्रव्यालोकविवरण	,,
	न्यायबिन्दु, प्रमाणरहस्य	,,
यशोविजय	मंगलवाद, वादमाला	,,
	वादमहार्णव, विधिवाद	,,
	वेदान्तनिर्णय	,,
	सिद्धान्ततर्क परिष्कार	,,
	सिद्धान्तमञ्जरी टीका	,,
	स्याद्वादमञ्जूषा	,,
	(स्याद्वादमञ्जरीकी टीका),	,,
	द्रव्यपर्याययुक्ति	,,
यशस्वत् सागर (१८वीं)	जैनसप्तपदार्थी	प्रकाशित
	प्रमाणवादार्थ	जैनग्रन्थग्रन्थकारमें
	वादार्थनिरूपण	,,
	स्याद्वादमुक्तावली	प्रकाशित
भावप्रभसूरि (१८वीं)	नयोपदेशटीका	प्रकाशित
मयाचन्द्र (१९वीं)	ज्ञानक्रियावाद	जैनग्रन्थग्रन्थकार
पद्मविजयगणि (१९वीं)	तर्कसंग्रहफक्किका	,,
ऋद्धिसागर (२०वीं)	निर्णयप्रभाकर	,,

इत्यादि

इस तरह जैनदर्शन ग्रन्थोंका विशाल कोशागार है। इस सूचीमें संस्कृत ग्रन्थोंका ही प्रमुखरूपसे उल्लेख किया है। कन्नड़ भाषामें भी अनेक दर्शनग्रन्थोंकी टीकाएँ पाई जाती हैं। इन सभी ग्रन्थोंमें जैनाचार्योंने अनेकान्तदृष्टिसे वस्तुतत्त्वका निरूपण किया है, और प्रत्येक वादका खंडन करके भी उनका नयदृष्टिसे समन्वय किया है। अनेक अजैनग्रन्थोंकी टीकाएँ भी जैनाचार्योंने लिखी हैं, वे उन ग्रन्थोंके हार्दको बड़ी सूक्ष्मतासे स्पष्ट करती हैं। इति।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org